डोरिस डोरी

मिमी

चित्र : ज्यूलिया कार्गेल

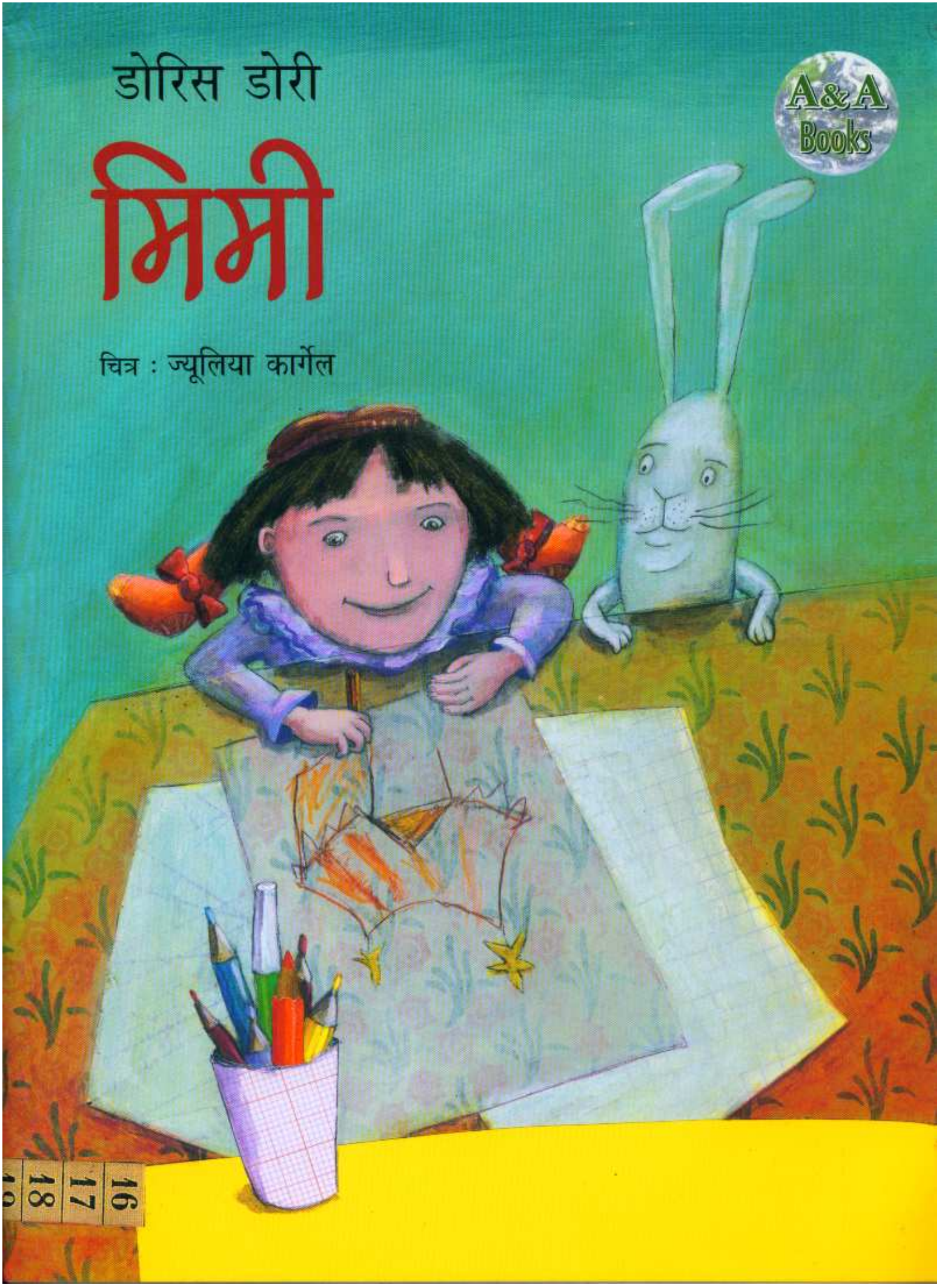

A&A Books

डोरिस डोरी

मिमी

चित्र ज्यूलिया कार्गेल

अनुवाद झेनिया ऑस्थेल्डर
अरुंधती देवस्थले

A&A Books

विंकी राय

एक दिन सुबह मिमी माथुर सो कर उठी तो उसे लगा कि उसे कोई और बन जाना चाहिए। क्या नाम रख लूँ अपना? रिंकी राय? जूही जोशी? या सोनी सिन्हा? हाँ, सोनी ठीक रहेगा। सोनी सिन्हा उससे एकाध साल बड़ी है, और उसके बाल लम्बे हैं, कमर से नीचे तक।

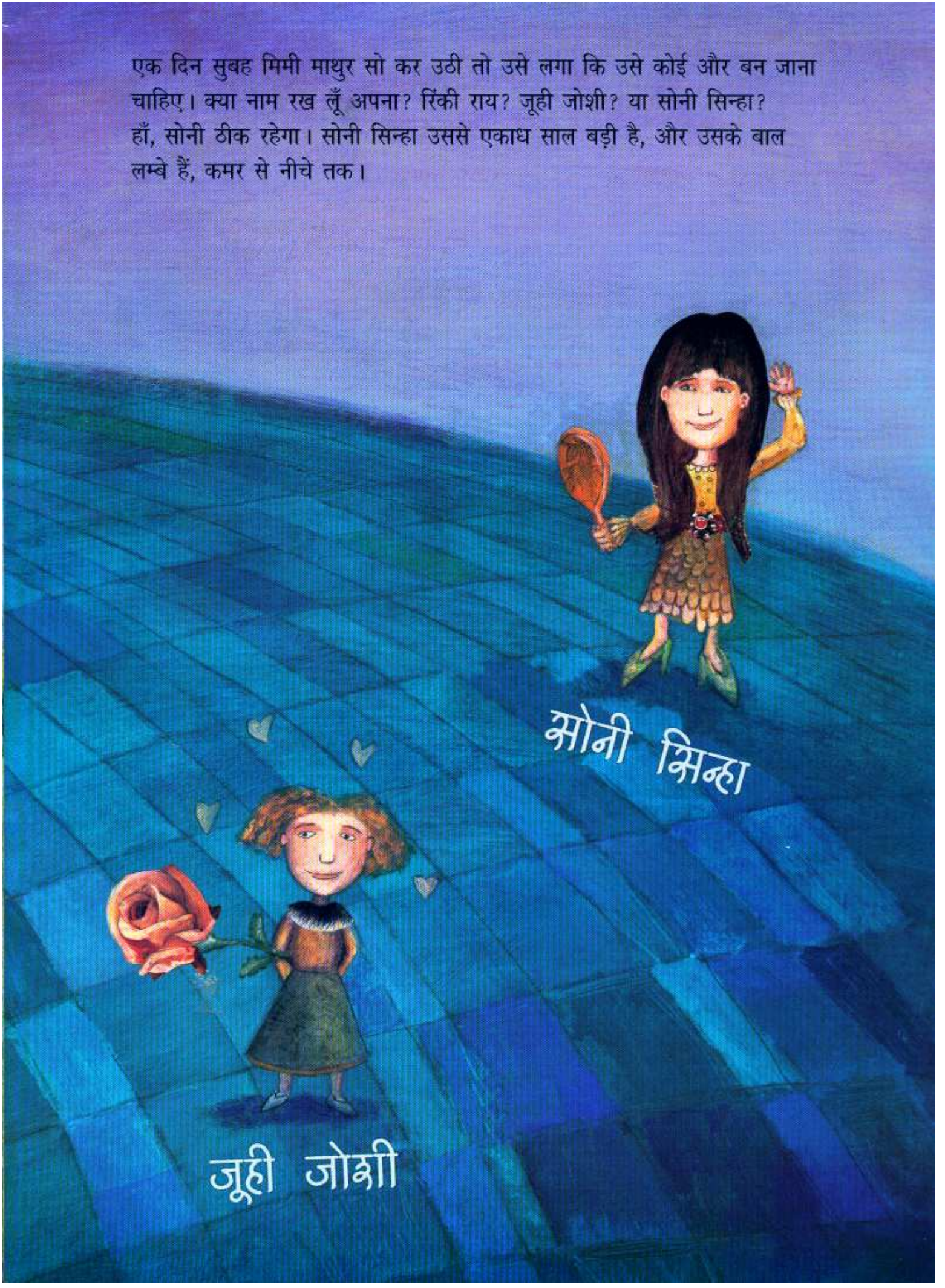

मिमी उठ खड़ी हुई और रोज से बिल्कुल अलग किस्म के कपड़े पहन लिए। पाजामा सिर पर पहन लिया और इस तरह, दोनों तरफ लटकती टाँगें उसकी लम्बी चोटियाँ बन गईं, एक इस तरफ और दूसरी उस तरफ। वह उन्हें झटके से पीछे डाल सकती थी या हवा में झूला भी सकती थी। अपने स्वेटर की बाँहें पेट पर कस कर उसने स्वेटर को स्कर्ट बना दिया। फिर माँ के चमचमाते जूते पहन लिए, जो उसे कभी-कभार पहनने की इजाजत थी। वाह, क्या लग रही थी वह!

इस तरह चुपके से वह घर से बाहर निकली और घर का दरवाजा खटाक से बन्द कर दिया, और फिर घूम कर बाहर से घंटी दबाई।

उसकी माँ ने दरवाजा खोला।
"नमस्ते, माथुर आंटी," मिमी ने कहा।
"नमस्ते, मिमी बिटिया," माँ ने आश्चर्य से उसे घूरते हुए कहा।
"मैं मिमी नहीं," मिमी ने कहा। "मैं हूँ सोनी सिन्हा। अब आपको मुझे सोनी ही कहना होगा और मैं आपको माथुर आंटी कहूँगी।"
उसकी माँ ने पलभर सोचा और वह बात समझ गई।
अच्छा, तो अब मिमी कोई और बन गई है। फिर वह बोली, "अरे, सोनी! बड़ा अच्छा किया जो तू आ गई। आ अन्दर।"

पापा बैठे नाश्ता कर रहे थे। "मिमी, यह कोई नया फैशन है, सिर पर पाजामा पहनना?" उन्होंने पूछा।

"यह है सोनी सिन्हा!" उसकी माँ ने पापा से कहा।

"यह हमसे मिलने आई है।"

"अच्छा," पापा बोले और उन्होंने सोनी को बैठने के लिए कहा। "कितनी मजे की बात है! यहाँ यह कुर्सी खाली है, हमारी मिमी कहीं बाहर गई है।"

"थैंक्यू," मिमी ने कहा और बैठ गई।

"ब्रेड पर आलूबुखारे का जैम लगा दूँ?" पापा ने पूछा।

"नहीं," सोनी ने कहा। "मुझे आलूबुखारे बिल्कुल पसन्द नहीं हैं।"

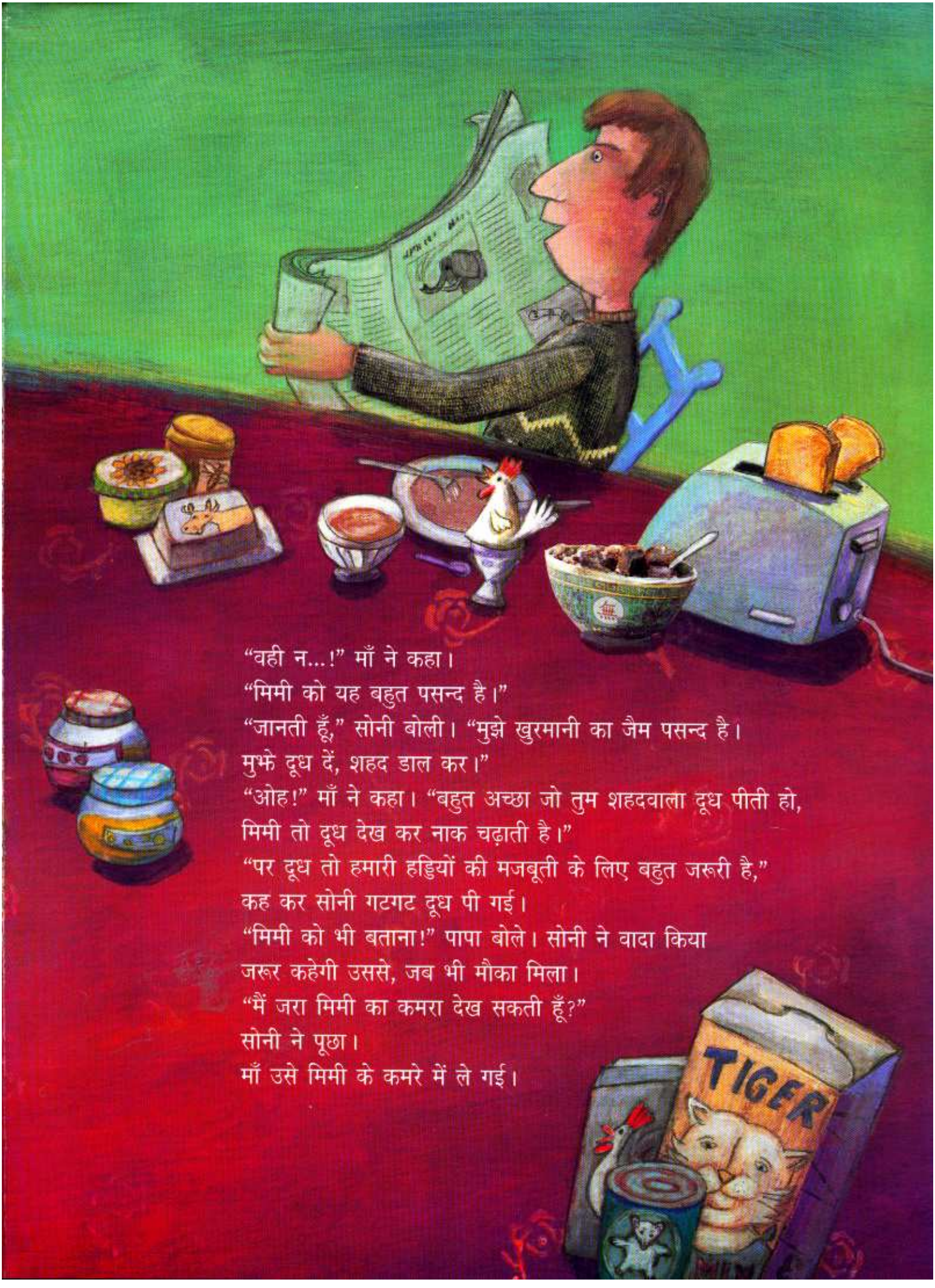

"वही न...!" माँ ने कहा।
"मिमी को यह बहुत पसन्द है।"
"जानती हूँ," सोनी बोली। "मुझे खुरमानी का जैम पसन्द है।
मुझे दूध दें, शहद डाल कर।"
"ओह!" माँ ने कहा। "बहुत अच्छा जो तुम शहदवाला दूध पीती हो,
मिमी तो दूध देख कर नाक चढ़ाती है।"
"पर दूध तो हमारी हड्डियों की मजबूती के लिए बहुत जरूरी है,"
कह कर सोनी गटगट दूध पी गई।
"मिमी को भी बताना!" पापा बोले। सोनी ने वादा किया
जरूर कहेगी उससे, जब भी मौका मिला।
"मैं जरा मिमी का कमरा देख सकती हूँ?"
सोनी ने पूछा।
माँ उसे मिमी के कमरे में ले गई।

"मिमी ने अपना कमरा ठीक से नहीं रखा!" सोनी ने कहा।
"खैर," माँ बोली। "ठीक ही है।"
"क्या आप कभी-कभार उसे डाँटती नहीं?" सोनी ने पूछा।
"हाँ," माँ ने कहा, "कहती तो हूँ। कभी-कभी चिल्लाती हूँ, 'अगर तुमने अपना सामान ठीक-ठाक नहीं किया तो मैं सब उठा कर बाहर फेंक दूँगी!' उसके पापा भी यों ही कहते हैं।"
"मेरी माँ भी यही कहती है," सोनी कुनमुनाई। "बिल्कुल यही बात! जब वह इस तरह नाराज हो जाती है, तो मेरे पेट में अजीब-सी हलचल होने लगती है।"
"सचमुच! यह तो नई बात पता चली!" माँ ने कहा, "तुम्हारा मतलब है, मिमी को भी ऐसा ही लगता है?"
"हाँ, शायद," सोनी ने कहा।
"आगे से मैं ध्यान रखूँगी..." माँ बुदबुदाई।
"यह ठीक रहेगा," सोनी ने कहा।
"क्या मैं यह कमरा जरा ठीक-ठाक कर दूँ?"
"जरूर," माँ ने कहा, "पर तुम तो यहाँ मेहमान हो..."
"मुझे साफ-सफाई का शौक है," सोनी ने कहा।

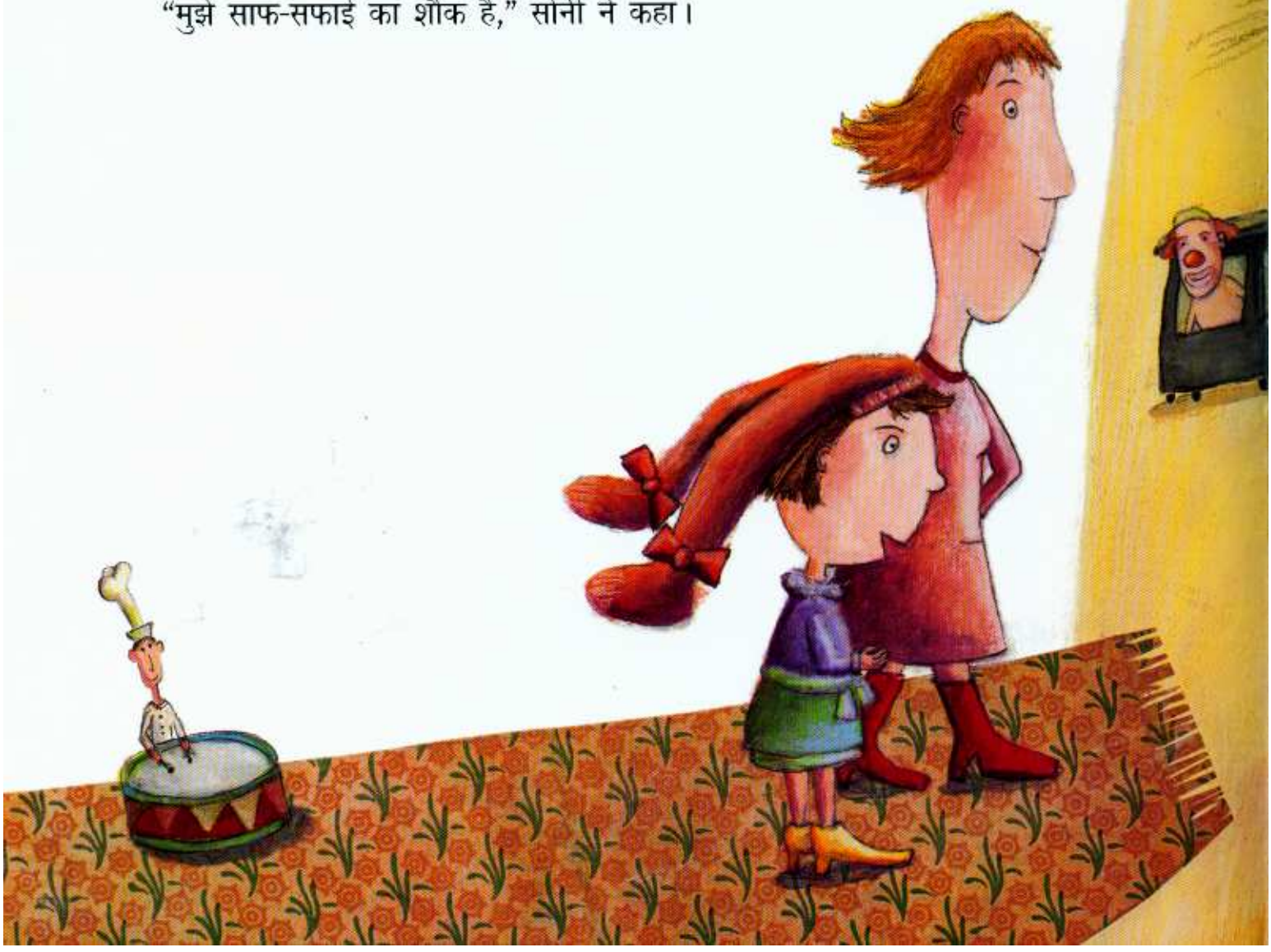

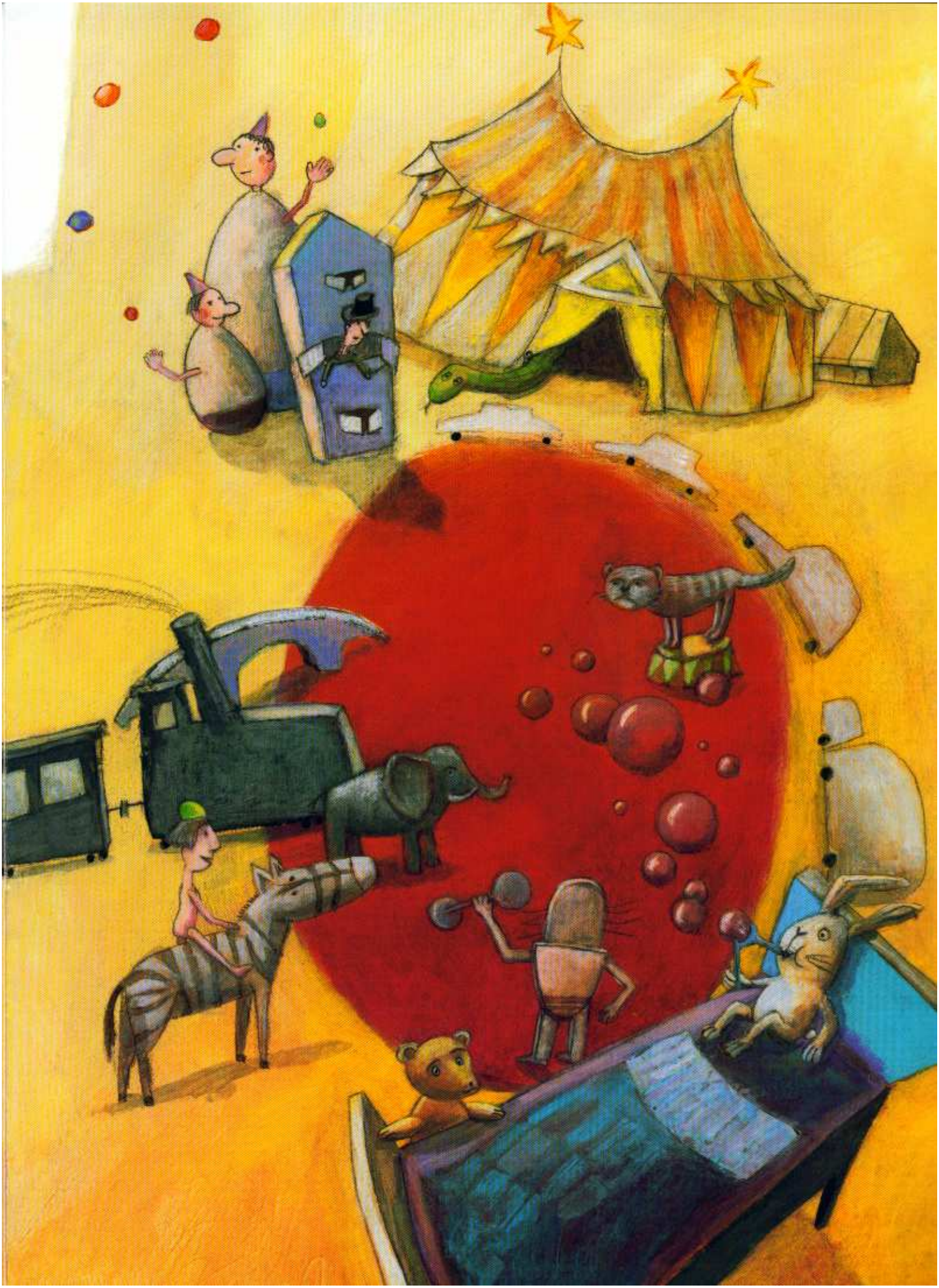

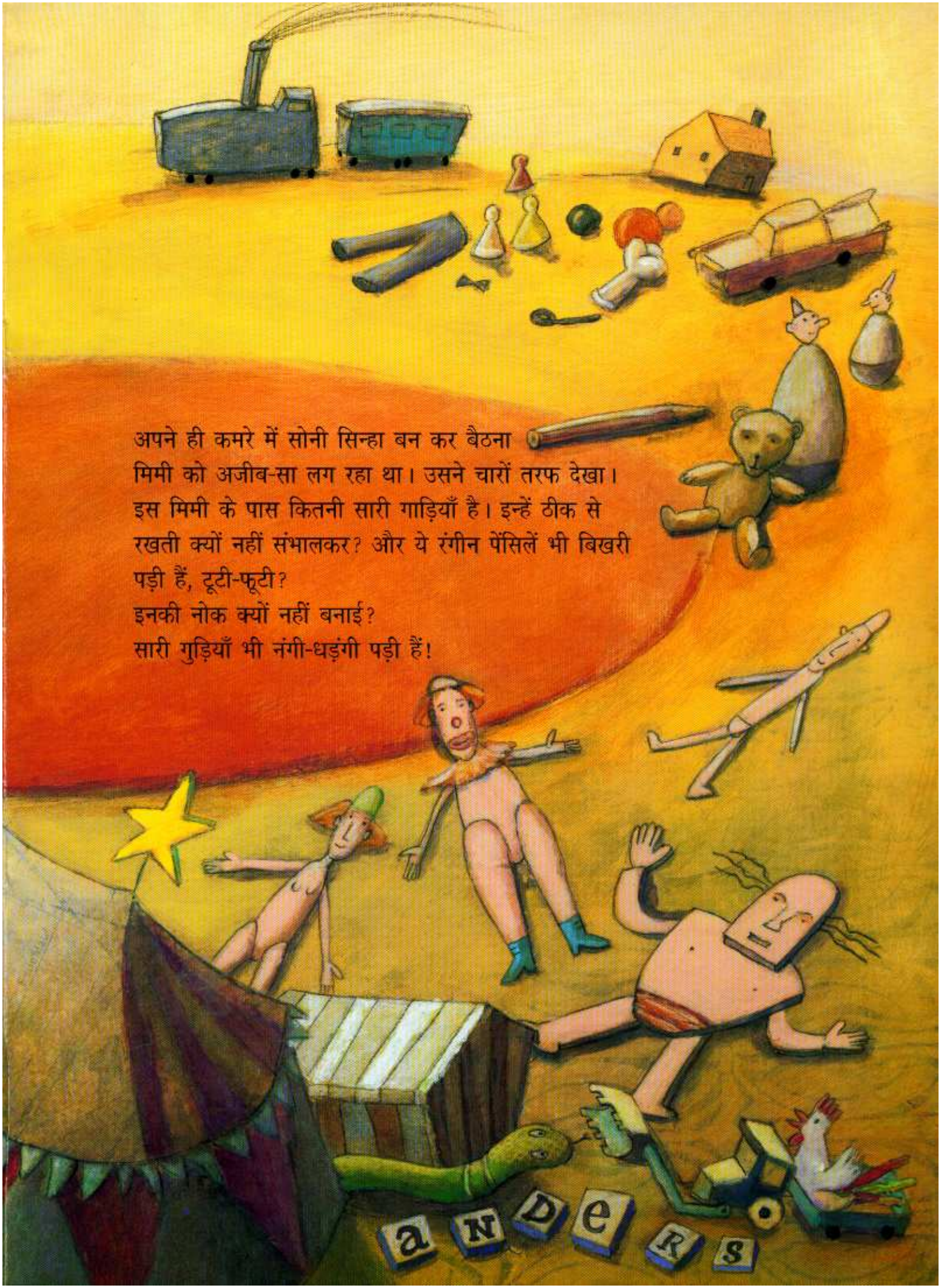
अपने ही कमरे में सोनी सिन्हा बन कर बैठना
मिमी को अजीब-सा लग रहा था। उसने चारों तरफ देखा।
इस मिमी के पास कितनी सारी गाड़ियाँ है। इन्हें ठीक से
रखती क्यों नहीं संभालकर? और ये रंगीन पेंसिलें भी बिखरी
पड़ी हैं, टूटी-फूटी?
इनकी नोक क्यों नहीं बनाई?
सारी गुड़ियाँ भी नंगी-धड़ंगी पड़ी हैं!
a N D e R S

थोड़ी देर बाद, माँ ने कमरे के अन्दर झाँककर देखा।
"मिमी, मेरा मतलब सोनी, क्या तेरी सफाई हो गई?"
"हम्म..." सोनी ने ठंडी साँस ली। "कितना कुछ करना है यहाँ।"
"मैं बस जरा सोच रही थी कि तुम बीच में ब्रेक लो, तो हम बाजार हो आते हैं..."

"जरूर, माथुर आंटी," सोनी बोली। "मैं अपने जूते पहन लूँ।"
"बढ़िया!" माँ ने कहा, "अरे सोनी, मुझे मिमी को सौ बार कहना पड़ता है,
अपने जूते पहनो!"
"वह तो जूतों की वजह से," सोनी बोली। "शायद मिमी जूतों के फीतों से चिढ़ती है।
उसे फीते ठीक से बाँधने नहीं आते न, इसलिए... पर वह यह मानना नहीं चाहती।"
"अरे! यह तो बड़ी मजेदार बात निकली!" माँ बोली।
"वही तो ना..." सोनी बोली। "मदद माँगने से जैसे उसकी नाक कट जाती है।"
"क्या आप मेरे फीते बाँध देंगी, माथुर आंटी?"
"जरूर," माँ ने कहा।

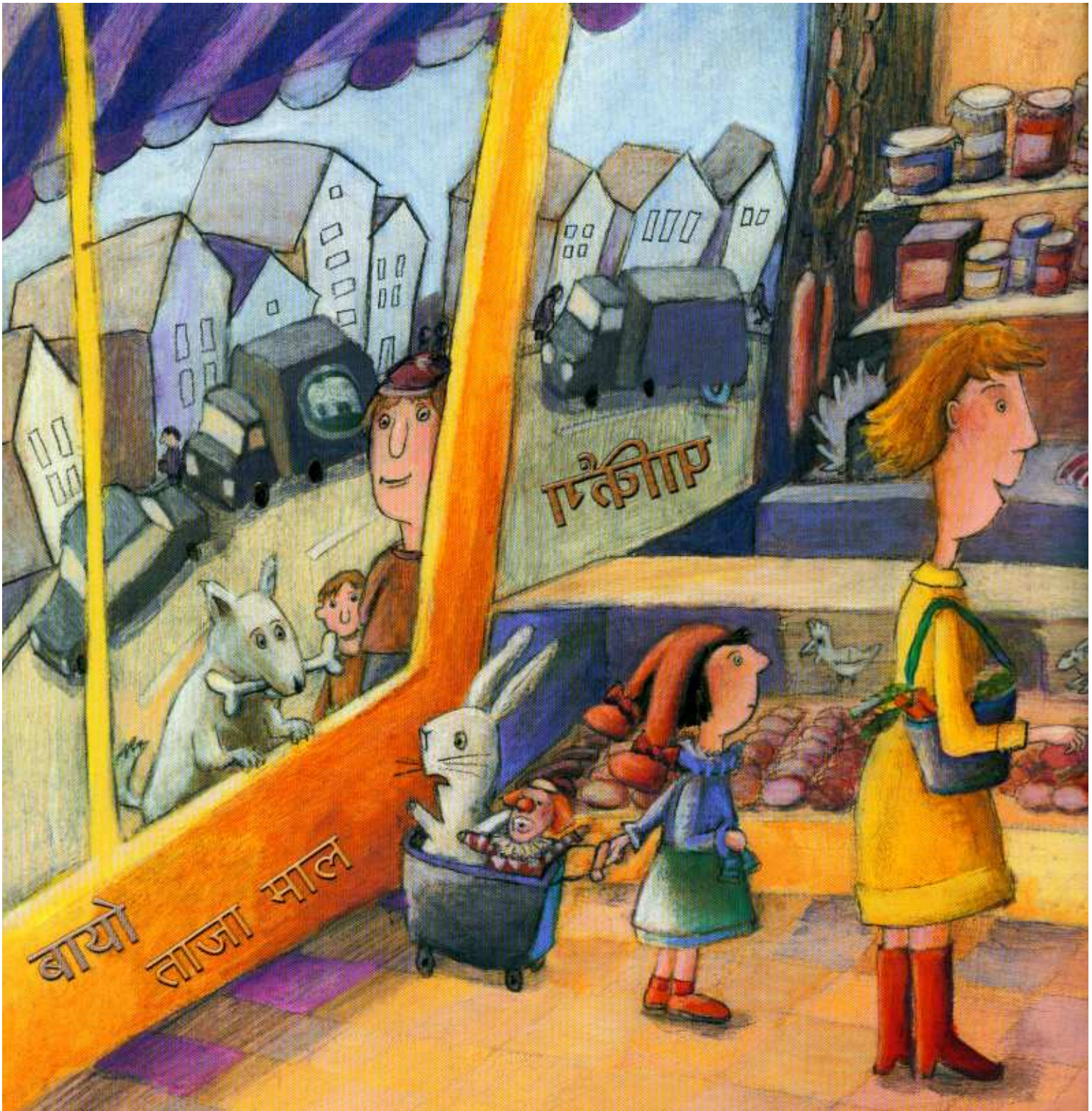

"क्या लेना चाहेंगी, मैडम?" जाने-पहचाने दुकानदार ने पूछा।
"ओहो! आज तो मिमी भी साथ आई है... क्या बात है मिमी, आज अपनी पसन्द की रोहू मछली नहीं चाहिए?"
"मैं मिमी नहीं, सोनी सिन्हा हूँ," मिमी बोली। "मैं आज यहाँ माथुर आंटी के साथ आई हूँ।"
दुकानदार ने हैरानी से मिमी को देखा, "अरे यह क्या लगा लिया है, सिर पर?"
"ये मेरी लम्बी चोटियाँ हैं..." सोनी ने कहा।

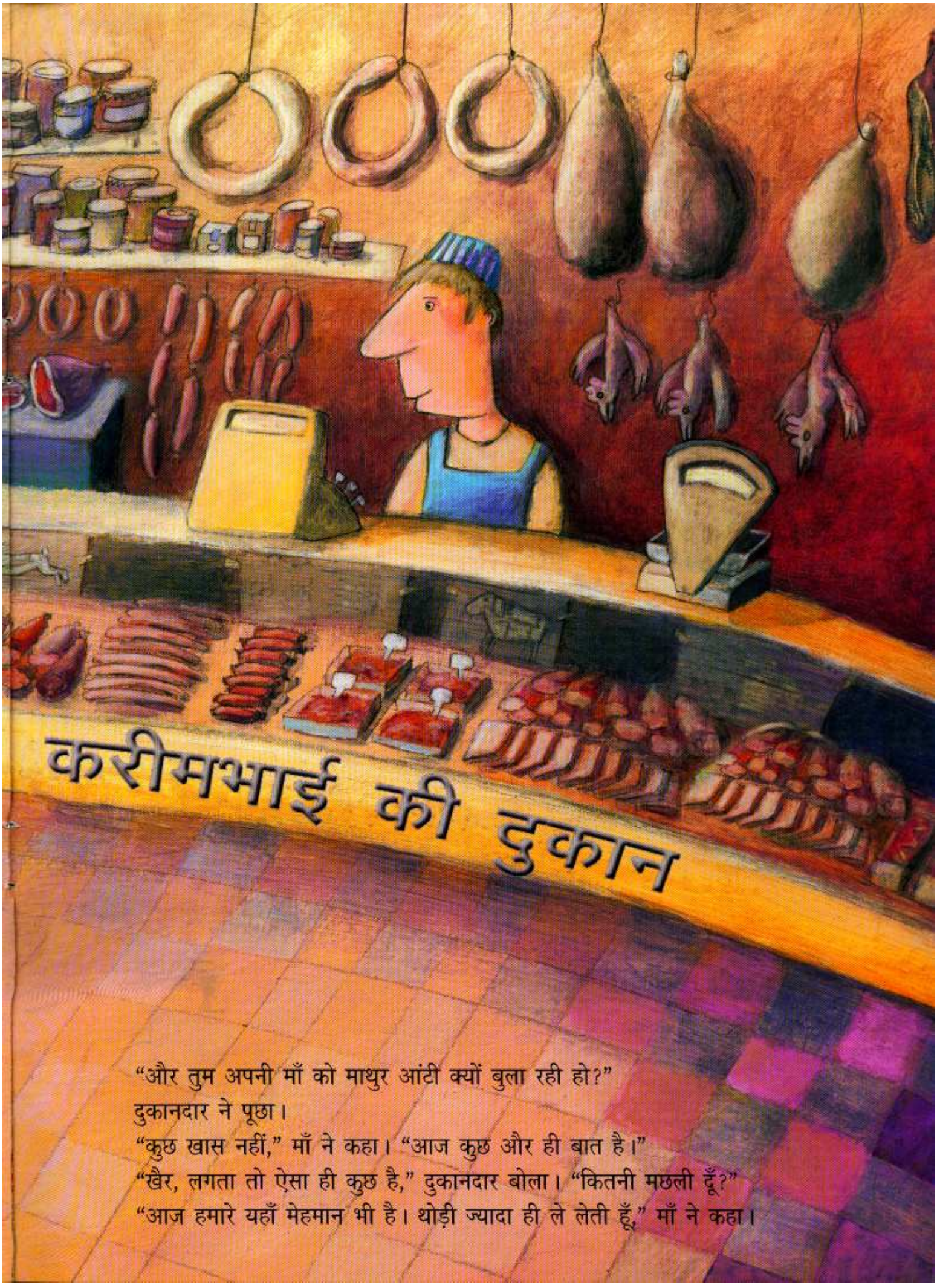

"और तुम अपनी माँ को माथुर आंटी क्यों बुला रही हो?"
दुकानदार ने पूछा।
"कुछ खास नहीं," माँ ने कहा। "आज कुछ और ही बात है।"
"खैर, लगता तो ऐसा ही कुछ है," दुकानदार बोला। "कितनी मछली दूँ?"
"आज हमारे यहाँ मेहमान भी है। थोड़ी ज्यादा ही ले लेती हूँ," माँ ने कहा।

"माथुर अंकल," सोनी ने पूछा, "आप अपनी बेटी के बारे में क्या सोचते हैं?"
"मिमी?" पापा बोले, "मिमी बहुत ही प्यारी लड़की है।"
"अच्छा..." सोनी ने बेमनी से कहा।
"क्यों नहीं? मेरी मिमी तो सचमुच बहुत अच्छी है।"
"हमेशा तो नहीं..."
"न भी हो!" पापा बोले "पर अगर वह हर समय अच्छी बच्ची बनी रहे तो हमें भी अच्छा नहीं लगेगा, उबाऊ हो जाएगा।"
"तो मैं आपको मिमी की कुछ बातें बताती हूँ," सोनी ने कहा। "सुन कर आप दंग रह जाएँगे।"
"अच्छा? कोई बात तो बताओ।"
"हम्म... पता नहीं मुझे आपसे यह कहना चाहिए या नहीं," सोनी ने हिचकिचाते कहा, "दरअसल, मैंने मिमी से वादा किया था कि मैं आपसे कुछ नहीं कहूँगी।"
"तब तो फिर तुम्हें नहीं बताना चाहिए।" पापा ने कहा।
"हाँ," सोनी बोली, "मुझे अपना वादा निभाना होगा। पर मिमी बहुत गजब की चीजें करती है।"

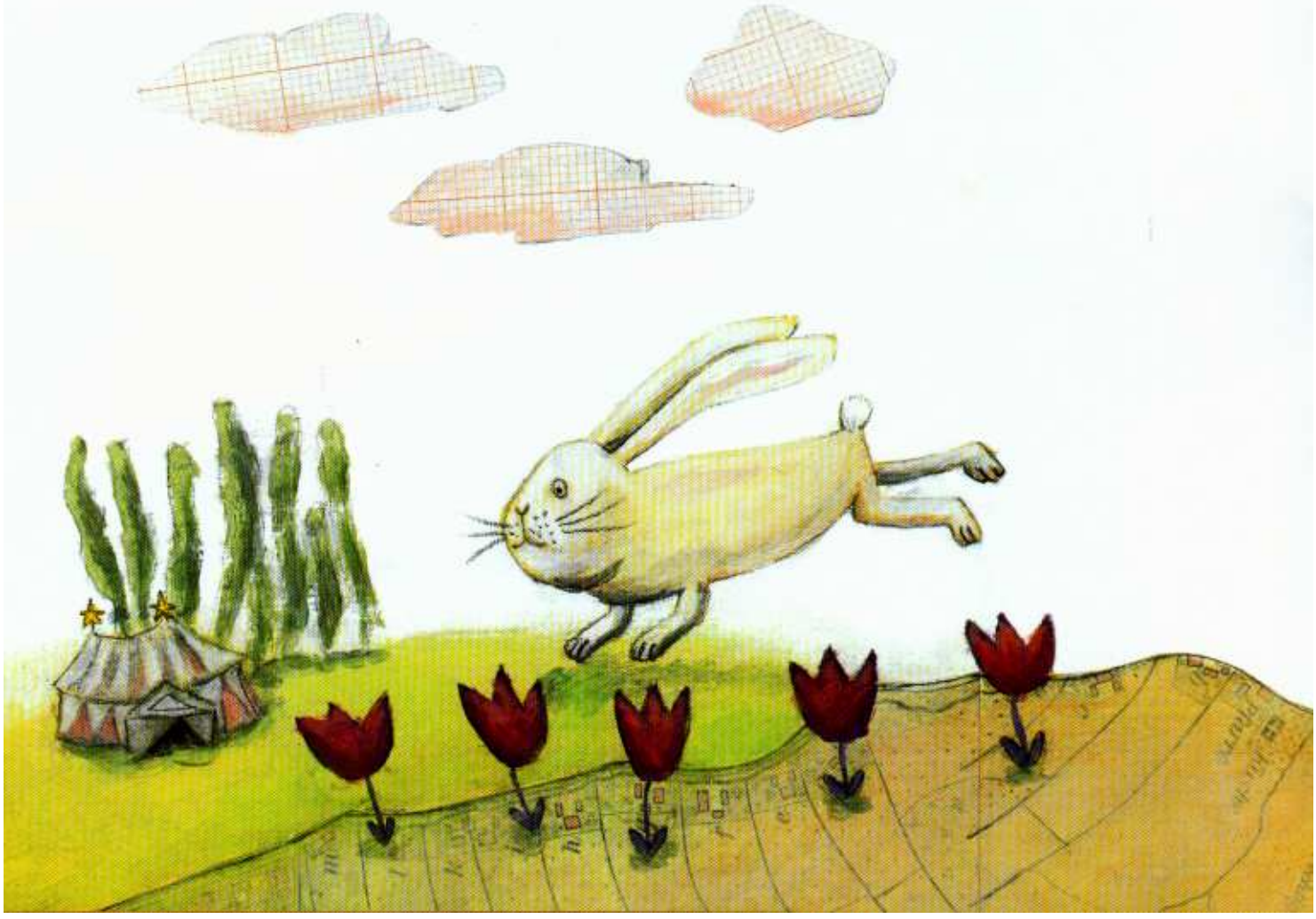

"हम्म..." पापा ने पूछा, "क्या कोई बहुत बुरी बात की है उसने?"
सोनी ने हामी में सिर हिलाया। "मैं कुछ कह तो नहीं पाऊँगी पर
कुछ दिखा दूँ तो..."
"क्या?"
"पर आप मिमी को कभी नहीं बताएँगे कि यह मैंने आपको दिखाया था।"
"बिल्कुल नहीं!" पापा बोले। "एक शब्द भी मेरी जुबान से नहीं निकलेगा।"
"कसम से?" सोनी ने पूछा।
"बिल्कुल पक्का।" पापा बोले।

"तो फिर अपनी आँखें बन्द कीजिए और मेरा हाथ पकड़िए।"
पापा ने आँखें बन्द कीं और सोनी उन्हें मिमी के कमरे में ले गई।

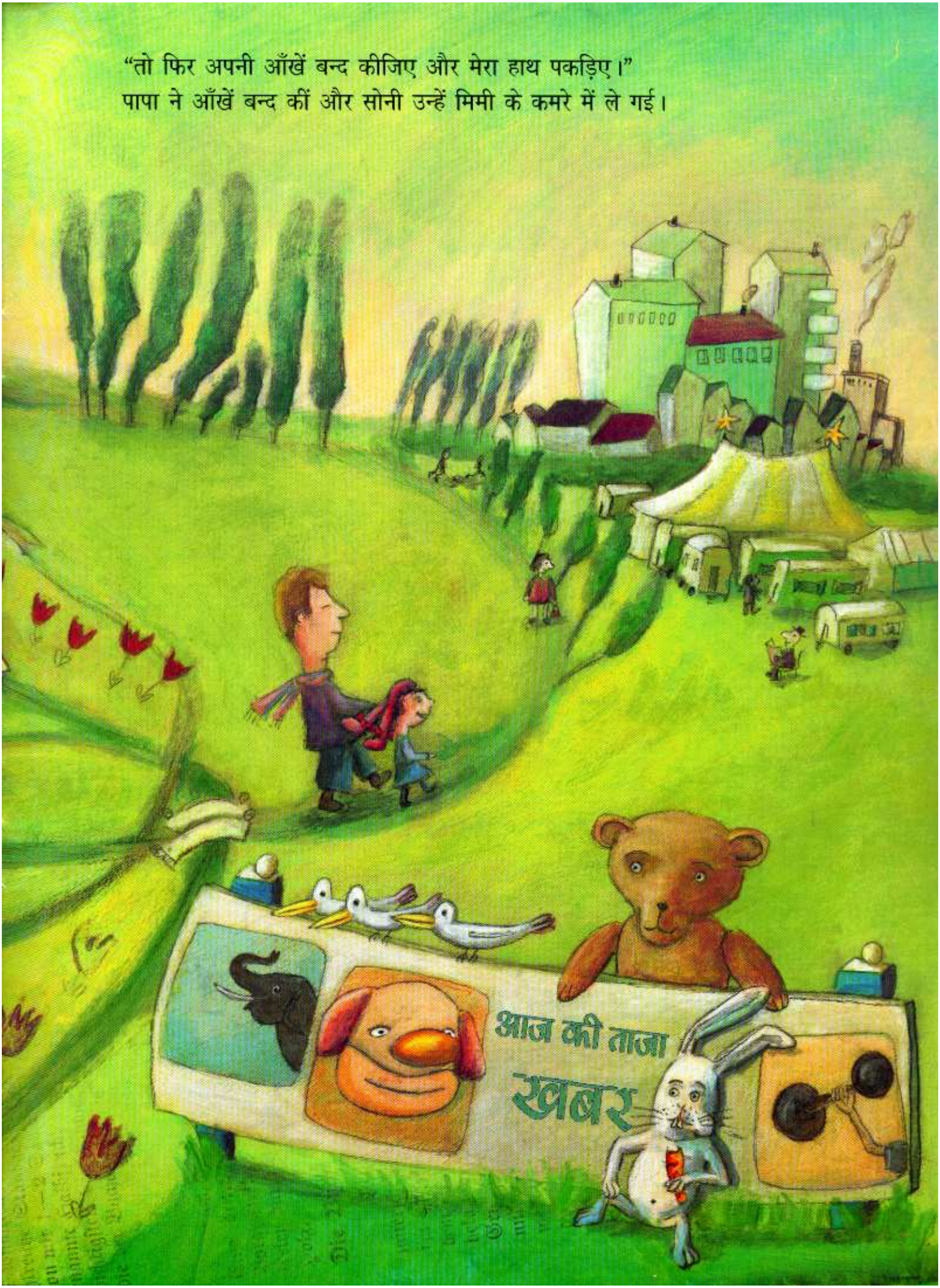

उसने बिस्तर से रजाई हटाई और मिमी का तकिया भी।
तकिये के नीचे चादर पर मिमी ने एक रंगबिरंगा चित्र बनाया था।
"अब आप आँखें खोल सकते हैं," वह बोली।
पापा ने आँखें खोलीं तो देखकर कहा, "हे भगवान!" जरा-सा रुककर वे बोले, "अरे, यह तो बहुत सुन्दर बनाया है।"
"मैं मिमी की माँ को भी ले आती हूँ," सोनी ने कहा।
"यह क्या है? मुझे तो यकीन ही नहीं आता!" माँ बोली।
"कब से चल रहा है, यह सब?"
"हर रोज शाम को थोड़ा-थोड़ा कर मिमी ने इसे बनाया!" सोनी ने बताया।
"जब आप उसे रात में सुला देती हैं तो वह चुपचाप फिर लाईट जला देती है और अपना चित्र बनाने में जुट जाती है।"
"अब पता चला! तभी तो वह रात को जल्दी सोना चाहती है," माँ ने कहा।
"मैंने कहा था न आपसे कि मिमी कोई शरारत कर रही है!" सोनी ने आह भर कर कहा।
"समझ में नहीं आता कि क्या कहूँ..." माँ बोली।
"तो अब क्या किया जाए?" पापा ने पूछा।
"वह बहुत डरी हुई है, अगर माँ-बाप को पता चल गया तो क्या होगा?" सोनी ने बताया।
"समझ रही हूँ," माँ ने कहा।
"पर यह चित्र बनाया बड़ा प्यारा है," पापा बोले।
"लेकिन उसे यह चादर पर नहीं बनाना चाहिए था," सोनी ने कहा।
"हाँ, अब यह मिटेगा नहीं," माँ बोली।
"धुलाई से भी फायदा न होगा।"
"अगर हम इसे काट दें तो?"
पापा ने पूछा।

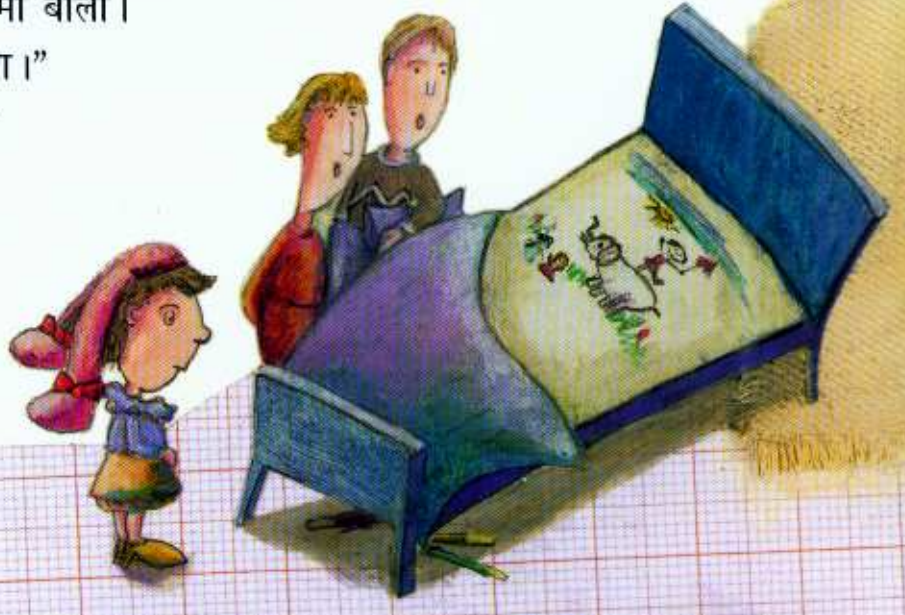

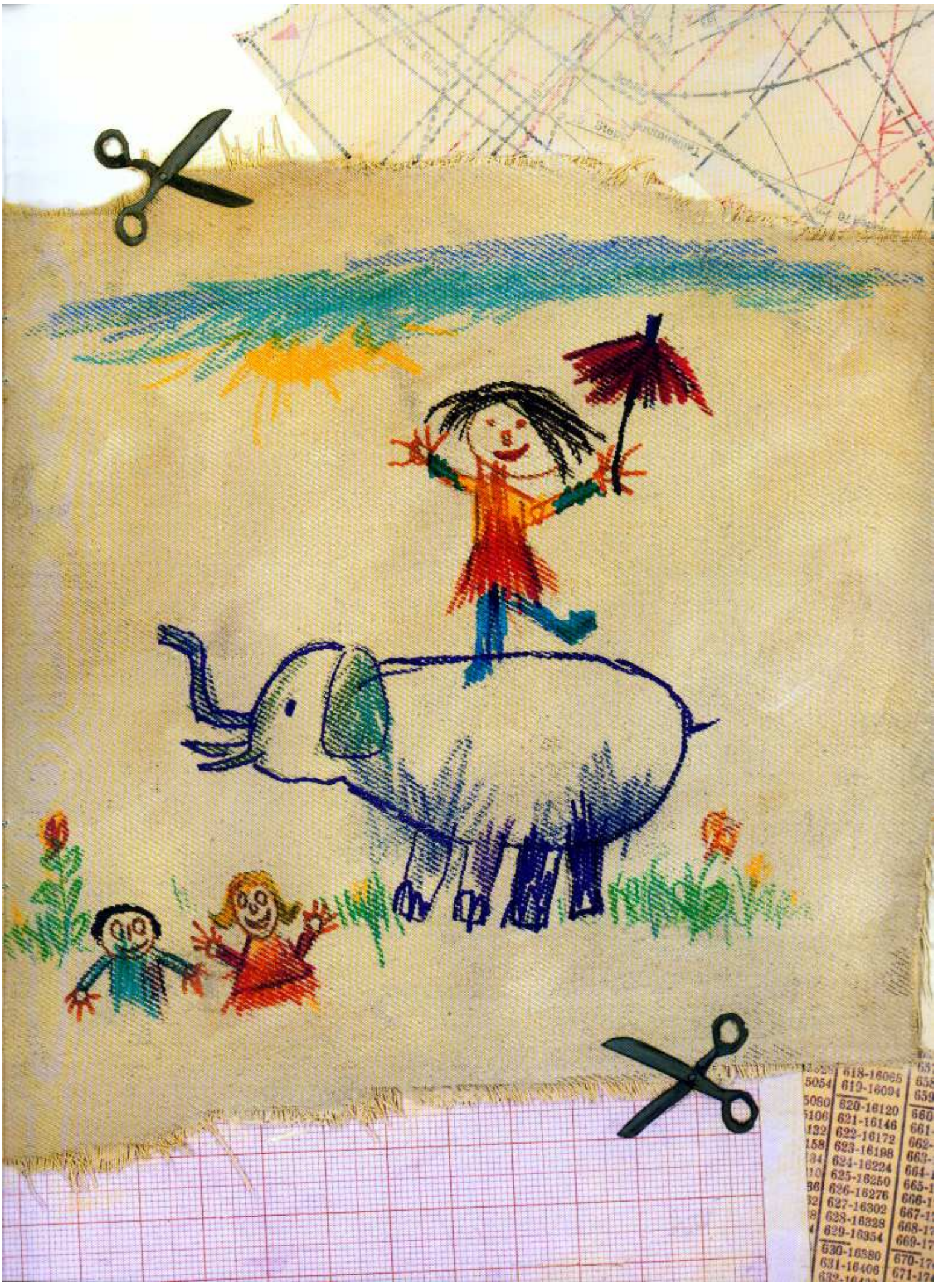

3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13

पापा एक हथौड़ा और कीलें लाए और माँ के साथ स्टूल पर खड़े हो गए।
दोनों ने मिल कर मिमी के पलंग के ऊपर वह चित्र लगा दिया।
"मिमी को बहुत डाँट तो नहीं पड़ेगी?" सोनी ने पूछा।
"खैर," पापा बोले, "जब वह घर लौटेगी तो यह चित्र यहाँ देख कर उसे झटका-सा लगेगा। शायद यह भी पता चले कि चित्र हमेशा कागज पर बनाना चाहिए, चादर पर नहीं।"
"जी हाँ," सोनी तपाक से बोली। "मुझे लगता है, वह ऐसी हरकत फिर नहीं करेगी।"
अपनी झूलती चोटी पीछे को झटकते हुए उसने कहा, "अब मुझे घर जाना चाहिए।"
"बड़ा अच्छा किया जो तुम आई," माँ और पापा बोले। "कभी-कभार आती रहो।"
"जरूर," कह कर सोनी अगले दरवाजे से बाहर निकल गई और खटाक से दरवाजा बन्द कर दिया।

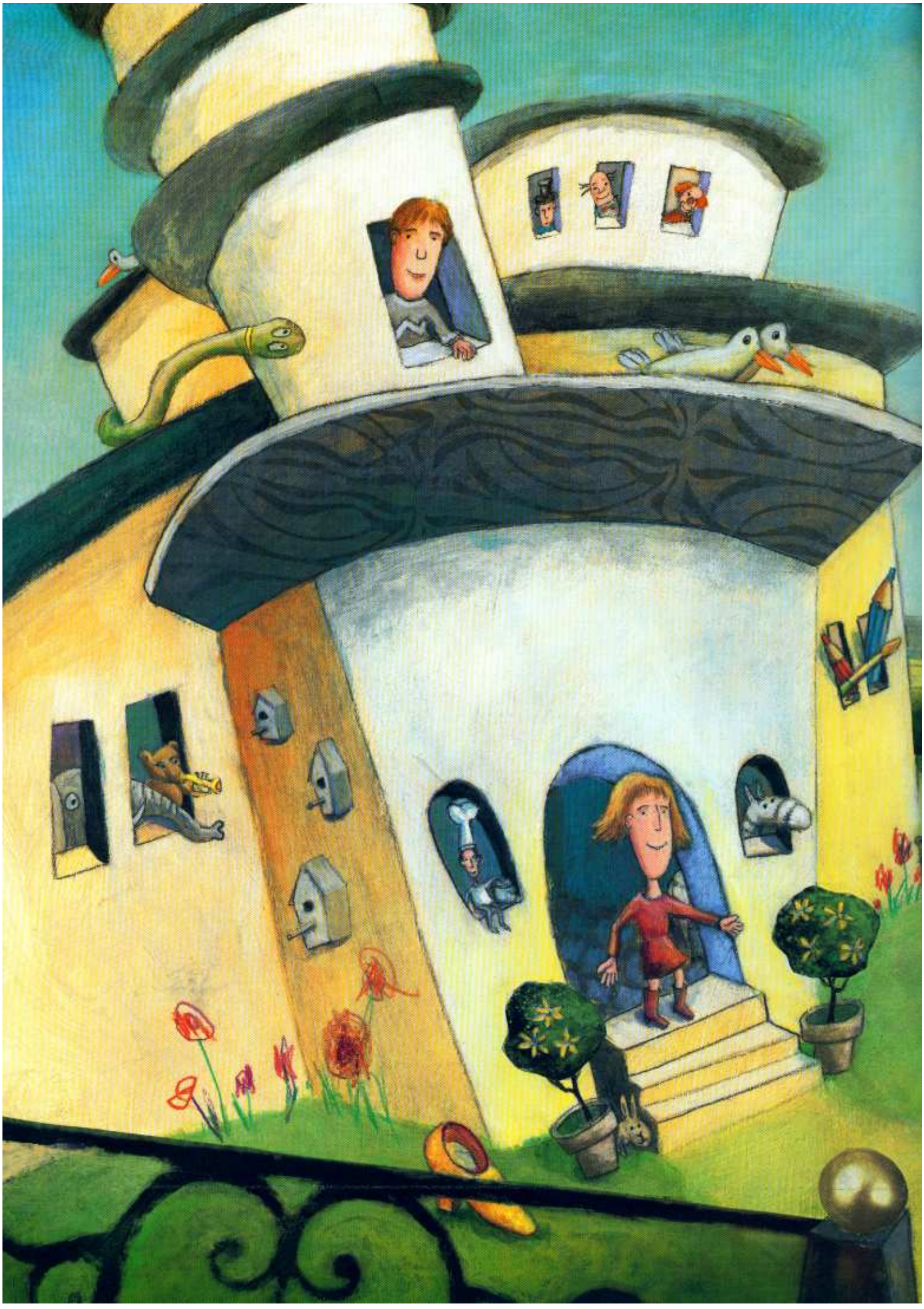

फिर घर के सामने खड़ी हो कर, सोनी ने सिर से पाजामा उतार फेंका, पेट पर बाँधा स्वेटर का स्कर्ट उतारा और चमकीले जूते भी। अब वह दुबारा मिमी बन गई थी। उसने घंटी बजाई तो माँ ने दरवाजा खोला।

"माँ?" मिमी ने कहा।

"मिमी, आ गई तू! तुझे बस जरा-सी देर हो गई। पता है, हमारे यहाँ कौन आया था?"

"मैं क्या जानूँ?" मिमी ने कहा।

"सोनी सिन्हा!"

"अच्छा, वह।"

"मुझे बहुत अच्छा लग रहा है कि तू लौट आई।" पापा बोले।

"आप दोनों को सोनी सिन्हा अच्छी लगी?" मिमी ने पूछा।

"हाँ," पापा बोले, "पर मुझे तो तुम ही सबसे अच्छी लगती हो!"

फिर घर के सामने खड़ी हो कर, सोनी ने सिर से पाजामा उतार फेंका, पेट पर बाँधा स्वेटर का स्कर्ट उतारा और चमकीले जूते भी। अब वह दुबारा मिमी बन गई थी। उसने घंटी बजाई तो माँ ने दरवाजा खोला।

"माँ?" मिमी ने कहा।

"मिमी, आ गई तू! तुझे बस जरा-सी देर हो गई। पता है, हमारे यहाँ कौन आया था?"

"मैं क्या जानूँ?" मिमी ने कहा।

"सोनी सिन्हा!"

"अच्छा, वह।"

"मुझे बहुत अच्छा लग रहा है कि तू लौट आई।" पापा बोले।

"आप दोनों को सोनी सिन्हा अच्छी लगी?" मिमी ने पूछा।

"हाँ," पापा बोले, "पर मुझे तो तुम ही सबसे अच्छी लगती हो!"

तीनों मिल कर मिमी के कमरे में गए।
"यहाँ कुछ अलग-सा नजर आ रहा है?" पापा ने पूछा।
"नहीं तो," मिमी बोली।
"मुझे भी कुछ बदला नहीं लग रहा।" पापा ने कहा।
"और तुम्हें, माँ?"
"पता नहीं... कुछ समझ नहीं आ रहा..." माँ ने कहा।
"हूँ..." मिमी ने लम्बी साँस ली। "मुझे भी नहीं मालूम। पर मेरा मन अब हल्का हो गया है। दिल कर रहा है कि एक चित्र बनाऊँ..."

मिमी ने कुछ गड़बड़ की है और उसे डर लग रहा है कि माँ-बाप से कैसे कहे? वह एक तरीका ढूँढ लेती है। कैसे? पढ़कर ही जानना होगा!

जर्मनी की जानी-मानी लेखिका, फिल्म निर्माता डोरिस डोरी की लिखी यह बिल्कुल तरो-ताजा कहानी "प्यारी बेटी दुलारी बेटी" श्रृंखला की शुरुआत करती है। श्रृंखला जो लड़की को प्यार और सम्मान की बराबर हकदार मानती है।

₹ 60
ISBN 978-93-80141-18-3
9 789380 141183